بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 11.07.25

मक्का पर सैन्य अभियान के हवाले से आँहज़रत ﷺ के जीवन परिचय का ईमान वर्धक वर्णन तथा वर्तमान परिस्थितियों में दुआएं करने और राशन इकठ्ठा करने की याददहानी।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः 11,जौलाई 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया– जैसा कि पिछले ख़ुत्ब: में बयान हुआ था कि कअबे की कुंजी उस्मान बिन तल्हा के पास थी। जब मक्का पर विजय प्राप्त हुई तो उस समय हज़रत अली रज़ी. ने सक़ाया अर्थात पानी पिलाने के पद के सौभाग्य के साथ कुंजी रखने का अधिकार भी प्राप्त करने की प्रार्थना की, अर्थात कुंजी उनको दे दी जाए। परन्तु रसूलुल्लाह ﷺ ने कअबे से निकलते हुए उसमान बिन तल्हा को बुलाया और उसको चाबी वापस करते हुए फ़रमाया- اَلۡیَوۡمُ یَوۡمُ الۡبِرِّ وَوَفَاءٍ अर्थात, आज नेकी एवं प्रतिज्ञाओं को पूरा करने का दिन है। उस समय उसमान बिन तल्हा मुसलमान हो चुके थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने क्यूं यह कहा, इसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है कि आप स. ने हिजरत से पहले एक बार उसमान बिन तल्हा से कअबे की चाबी माँगी थी तो उसने जवाब में आप स. को बुरा भला कहा तथा अत्यंत अभद्र भाषा उपयोग की थी। आप स. ने उस समय अत्धिक धैर्य किया और फ़रमाया कि ऐ उस्मान! याद रखो कि यह चाबी किसी न किसी दिन मेरे हाथ में आएगी और मैं इसे अपनी इच्छा से जिसे चाहूंगा, दूंगा। उसमान ने तो उस समय यूं जवाब दिया था कि यदि ऐसा समय आया तो वह क़ुरैश के विनाश एवं घोर अपमान का समय होगा। इस

पर आप स. ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं, बल्कि उस समय तो क़ुरैश की आबादी तथा सम्मान एवं प्रतिष्ठा होगी। ये सारे अत्याचार जो उस समय आप स. पर किये गए थे, आप स. को याद थे, परन्तु बावजूद इसके कि आप स. ने इन लोगों पर रहमत एवं दया फ़रमाई, आप स. ने उससे कहा कि यह चाबी सदा के लिए ले लो, तुमसे केवल अत्याचारी ही इसे छीनेगा, अब यह तुम्हारे परिवार में रहेगी। अतः आज तक ख़ाना ए कअबा की चाबी उसी वंश में पीढ़ियों से चली आ रही है।

रिवायत है कि मक्का पर विजय प्राप्त करने के दूसरे दिन बनू ख़ज़ाअ: ने बनू बदील के मुशरिक व्यक्ति की हत्या कर दी, तो रसूलुल्लाह ﷺ ज़ोहर की नमाज़ के बाद ख़ुत्ब: देने के लिए खड़े हुए। आप स. ने अल्लाह तआला के गुणों की प्रशंसा की और फ़रमाया- ऐ लोगो! अल्लाह तआला ने मक्के को उस दिन से हरम (पवित्र, जिसमें लड़ना अवैध है) बनाया है जिस दिन उसने आसमानों एवं धरती की रचना की, और फ़रमाया जिस दिन उसने सूर्य एवं चन्द्रमा को रचा, तथा ये दो पर्वत सफ़ा एवं मर्वा नामक बनाए। इसे लोगों ने हरम नहीं बनाया, बल्कि अल्लाह तआला ने बनाया है। यह क़यामत के दिन तक सुरक्षित एवं पवित्र है। अतः जो व्यक्ति अल्लाह तआला एवं आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो उसके लिए वैध नहीं कि वह इसमें रक्तपात करे और न इसके वृक्षों को काटे, यह ना मुझसे पहले किसी के लिए वैध हुआ और न मेरे बाद किसी के लिए वैध होगा। मेरे लिए केवल एक क्षण के लिए वैध हुआ था, फिर इसकी प्रतिबन्धिता उसी प्रकार लौट आई है जिस तरह कल थी। तुममें से जो यहाँ उपस्थित है वह अनुपस्थित लोगों तक यह बात पहुंचा दे जो तुम्हें कहे कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इसमें लड़ाई की थी, तो उससे कहो कि अल्लाह तआला ने इसे अपने रसूल ﷺ के लिए वैध किया था, तुम्हारे लिए वैध नहीं किया। ऐ लोगो! लोगों में से अल्लाह तआला पर सर्वाधिक अभय वह व्यक्ति है जिसने हरम (कअबे) में हत्या की, अथवा अपने हत्या के अपराधी के अतिरिक्त किसी अन्य की हत्या की, अथवा इस्लाम से पूर्व के बदले के कारण हत्या की। ऐ बनू ख़ुज़ाअ:! हत्या से हाथ रोक लो, तुमने एक व्यक्ति की हत्या की है, मैं इसकी हत्या के बदले धन दूंगा, जो मारी शरण में आए किसी व्यक्ति की हत्या करेगा तो उसके परिवार को दो अधिकार प्राप्त होंगे कि यदि वे चाहें तो बदले में दीय्यत (धन) ले लें, और यदि चाहें तो उस हत्यारे की हत्या कर दें। फिर आप स. ने उस व्यक्ति की हत्या पर बदले के रूप में एक सौ ऊँट दे दिए, जिसको बनू ख़ुज़ाअ: ने मार डाला था, उनकी ओर से आप स. ने दीय्यत प्रदान की।

उन्हीं दिनों फ़ुजाला बिन उमेर द्वारा आप स. की हत्या करने की योजना भी प्रकट हुई। यह कहता है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ख़ाना ए कअबा की परिक्रमा कर रहे थे तो मैं भी उस भीड़ में छुरे से वार करके आप स. को नऊज़ुबिल्लाह मार डालने के इरादे से आप स. के पीछे पीछे हो लिया। ज्यूं ही आप स. के निकट पहुंचा तो आप स. ने उसे देखकर फ़रमाया कि तुम फ़ुज़ाला हो? उसने कहा कि जी हाँ। फ़रमाया कि तुम्हारे मन में क्या है? उसने झूठ बोला और कहने लगा कि मैं अल्लाह की स्तुति कर रहा हूँ। इस पर आप स. मुस्कुराए और फ़रमाया कि अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करो,जो कह रहे हो वह तुम नहीं कर रहे, और आप स. निकट आए और उसके सीने पर हाथ रखा। फ़ुज़ाला बयान करते हैं कि बख़ुदा! आप स. ने मेरे सीने से हाथ नहीं उठाया था कि दुनिया में सबसे अधिक प्रिय मुझे मुहम्मद ﷺ ही लगने लगे। वह अपने घर वालों की ओर वापस लौट आया तथा उसकी काया ही पलट गई।

इन्हीं दिनों में हज़रत अबू बकर रज़ी. के पिता जी का इस्लाम क़ुबूल करने की घटना का वर्णन भी

मिलता है।

एक वर्णन हज़रत उम्मे हानी रज़ीयल्लाहु अन्हा के घर आप स. का खाना खाने का मिलता है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी. से रिवायत है कि आप स. ने मक्के पर विजय पाने वाले दिन हज़रत उम्मे हानी रज़ी. से फ़रमाया कि तुम्हारे पास खाना है, जिसे हम खाएं? उन्होंने निवेदन किया कि सूखी हुई रोटी के टुकड़ों के अतिरिक्त कुछ नहीं है और मुझे वह आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हुए लाज आती है। आप स. ने फ़रमाया कि उन्हें ही ले आओ। आप स. ने उन्हें पानी में भिगोया, वे नमक साथ ले आईं, आप स. ने फ़रमाया- क्या शोरबा है कोई? उन्होंने कहा कि या रसूलुल्लाह ﷺ! मेरे पास सिरके के अतिरिक्त कुछ नहीं है। आप स. ने फ़रमाया कि वह सिरका ही ले आओ। आप स. ने उसे खाने पर उंडेला और उसमें से खाया और अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया। फिर फ़रमाया कि सिरका क्या ही उत्तम सालन है, ऐ उम्मे हानी! जिस घर में सिरका उपलब्ध हो वह निर्धन नहीं कहलाता। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह के प्रति आभार व्यक्त करने की भी चरम सीमा है और उम्मे हानी रज़ी. का दिल भी रख लिया। मक्का को विजय करने वाले की यह दशा है, जबकि सब कुछ हर घर से उपलब्ध हो सकता था किन्तु आप स. ने उन छोटे सूखे हुए रोटी के टुकड़ों पर संतोष किया।

आप स. के मक्का पहुँचने और वहाँ हर चीज़ तथा विशेषतः ख़ाना ए कअबा को स्नेह पूर्ण दृष्टि से देखने पर अंसार के दिल में संदेह उत्पन्न हुआ कि आप स. कहीं यहाँ पर ही न रुक जाएं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ी. बयान करते हैं कि जब अंसार की यह दशा थी तो आँहज़रत ﷺ पर उस समय वहयी अवतरित हुई और जब वहयी पूरी हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ गिरोहे अंसार! तुम यह सोच रहे हो कि इस व्यक्ति पर देस का प्यार उमड़ पड़ा है। उन्होंने कहा कि ऐसा ही है। आप स. ने फ़रमाया कि यदि ऐसा हुआ तो मेरा नाम क्या होगा? मैं मुहम्मद हूँ, अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूँ। मैंने अल्लाह के लिए तुम्हारी ओर हिजरत की थी, अब मेरा जीना मरना तुम्हारे साथ ही है। इस पर वे अत्यधिक रोते हुए आप स. की ओर बढ़े और कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! हमने जो भी कहा वह अल्लाह और उसके रसूल स. से अत्यंत प्रेम एवं आप स. की जुदाई के भय से कहा था। रसूलुल्ल्हा ﷺ ने फ़रमाया कि निःसंदेह! अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारी बात की पुष्टि करते हैं और तुम्हारी विवशता हम क़ुबूल करते हैं।

जब ज़ोहर की नमाज़ का समय हुआ तो आप स. ने हज़रत बिलाल रज़ी. को आदेश दिया, तो उन्होंने ख़ाना ए कअबा की छत पर चढ़ कर अज़ान दी। रिवायत है कि आप स. ने उस दिन सारी नमाज़ें एक ही वज़ू से अदा फरमाईं। हज़रत उमर रज़ी. ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह ! आपने आज वह किया है जो आप स. पहले नहीं किया करते थे। रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि उमर ! मैंने जान बूझकर ऐसा किया है। विद्वानों ने इससे यह परिणाम निकला है कि आप स. ने आवश्यकता के समय ऐसा करने की सुविधा के लिए यह नमूना दिया था।

इस अवसर पर आप स. ने सार्वजनिक बैअत भी ली। आप स. ने उनसे ईमान बिल्लाह और इस गवाही पर बैअत ली कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। जब पुरुषों की बैअत ले चुके तो आप स. ने महिलाओं की बैअत ली, उन महिलाओं में अबू सुफ़यान की बावी हिन्दा भी थी।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि वे दोषी जिनकी हत्या का आदेश पारित हुआ, उनके विषय में लिखा है,

विवरण बयान करता हूँ, यद्यपि इस बारे में लोगों के भी कुछ संकोच हैं और घटना क्रम भी यही बताते हैं, क्यूंकि जिन कारणों से हत्या के आदेश के बारे में बयान किया गया है, यह स्पष्ठ रूप से आँहज़रत ﷺ के अमल एवं प्रकृति के विरूद्ध है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इस हवाले से अपने जो विचार रखे हैं वे ये हैं कि केवल ग्यारह पुरुष एवं चार महिलाएं ऐसी थीं कि जिनके बारे में घोर अपराध एवं हत्याएं साबित थीं, मानो वे युद्ध के अपराधी थे और उनके सम्बन्ध में रसूलुल्लाह ﷺ का आदेश था कि वध कर दिए जाएं, क्यूंकि वे केवल कुफ्र अथवा लड़ाई के अपराधी ही नहीं थे बल्कि युद्ध के अपराधी थे, परन्तु उनमें से अधिकाँश को मुसलमानों की सिफ़ारिश पर आप स. ने छोड़ दिया।

इस हवाले से विस्तृत जानकारी तथा उनका रद्द पेश करने के बाद हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इसमें सन्देह नहीं कि कुछ क़ुरैश के सरदार, जो इस्लाम के विरोधियों का नेतृत्व कर रहे थे, आँहज़रत ﷺ के पधारने की सूचना को सुनकर मक्के से भाग गए। परन्तु यह केवल इब्ने इस्हाक़ का अनुमान है कि वे इस कारण से भाग गए थे कि उनकी हत्या का आदेश दिया गया था। अभिप्रायः यह है कि मक्के पर विजय के समय केवल कुछ ही लोगों की हत्या का निर्णय हुआ, और वे वही लोग थे जिनके बारे में हकम व अदल हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि केवल उन्हीं कुछ लोगों को दण्डित किया जिनको दंड देने के लिए हज़रते अह्दियत की ओर से स्पष्ठ आदेश आ चुका था, और उन कट्टर अपराधियों के अतिरिक्त हर एक दुश्मन को क्षमा कर दिया। तो यह है इसकी वास्तविकता। इस लिए यह कहना कि इतने आदमियों की हत्या की गई थी, नक़ल उतारने वाले थे, रिसालत का अपमान करने वाले थे, ये सब ग़लत बातें हैं, शेष इन्शाल्लाह आगे बयान करूंगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- विश्व की अवस्था तो आप लोगो के सामने है, दुआएं करते रहें इसके लिए। पहले भी कई बार कह चुका हूँ, कहता रहता हूँ कि आपात कालीन स्थिति के लिए लोगों को कुछ महीनों का राशन अपने घरों में रखना चाहिए, जो रख सकते हैं। अब तो कुछ सरकारों ने भी अपनी जनता को कहा है कि तीन महीने का राशन रखें। अल्लाह तआला हर प्रकार से दुनिया पर दया करे और युद्ध के भयानक रूप से बचाए।

ख़ुत्बः जुमः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने अम्तुन्नसीर निगहत साहिबा पत्नी राजा अब्दुल मालिक साहब जो हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद रज़ी. की पोती, हज़रत नवाब अम्तुल हफीज़ बेगम साहिबा रज़ी. की नवासी और कर्नल मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहब की बेटी थीं, उनका और मुकर्रम अलहाज यअक़ूब अहमद बिन अबू बकर साहब पूर्व हेड मास्टर सीनियर स्कूल और नेशनल सेकरेट्री तबलीग़ घाना का सदवर्णन फ़रमाया और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब